RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without
prepayment No.-WPP-255/31.12.2018

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

भारतीय जैन संघटना समाचार

श्री शांतीलाल मुथ्था
संस्थापक

Editor - Prafulla Parakh

वर्ष 1 अंक 12 | मूल्य - रू.1/- | दिसंबर 2016 | पृष्ठ - 8

विवाह एवं परिवार सृष्टि के सृजन का आधार

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से.....2
मंथन:आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में विवाह.....3
आदर्श विवाह एवं सुखी परिवार हेतु बीजेएस के कार्यक्रम.....4
लगातार 25 वर्षों से नि:शुल्क
प्लास्टिक सर्जरी शिविर का आयोजन 5
प्रतिभाएँ-जो हमारी प्रेरणा के स्त्रोत है.....6
संवैधानिक अधिकारों के प्रति
जैन समुदाय में सचेतनता आवश्यक 7

प्रिय आत्मजन,

पिछले लगभग 2-3 माह में देश व दुनिया में अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित हुई हैं. भारतीय सेना द्वारा सफल 'सर्जिकल स्ट्राईक' व अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का आतंकवाद के विरुद्ध वृहद स्तर पर भारत को समर्थन, भारतीय विदेश नीति की सफलता का परिचायक लग रहा है. 500 व 1000 के नोटों के विमुद्रीकरण से समानान्तर अर्थव्यवस्था, कालाधन व जाली नोटों की समस्याओं के निवारण में लिया गया महत्वपूर्ण कदम है. सरकार के इस निर्णय से देश की अर्थव्यवस्था कितनी सुदृढ़ होगी यह तो भविष्य के गर्त में छिपा है. लिए गये इस निर्णय से यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि **"समय है बदलाव का-समय के साथ बदले"** को चिंतन में भारत सरकार द्वारा लिया गया है. इन राष्ट्रीय घटनाक्रमों के संदर्भ में देशवासियों की विशेषकर जैन समुदाय के कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों पर आपसे मन खोलकर चर्चा करना चाहता हूँ, किन्तु इस अंक में हम 'विवाह एवं परिवार' विषय पर आपसे चर्चा कर रहे हैं.

परिवार समाज की प्रथम इकाई है. परिवार का अस्तित्व अंततः विवाह की फलश्रुति है. उन्नत, प्रगतिशील एवं आदर्श समाज की स्थापना सुखी परिवारों की देन है. परिवर्तन प्रकृति का अभेद्य नियम है, फलस्वरूप प्रत्येक दशक एवं शताब्दी में समाज का चित्र अविरत रूप से बदलता रहता है. निरंतर बदलती हुई स्थितियों में परिवार नाम की संस्था पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रहारों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है. परिणामस्वरूप उदभवित होती परिस्थितियों एवं अनेक दुष्परिणामों को समझना हम सभी के लिए आवश्यक है. यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या हमारा परिवार "सुखी परिवार" की कसौटियों पर खरा उतर कर आदर्श समाज के निर्माण में सहायक है?

विवाह के माध्यम से ही हम उन उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं जो सृष्टि के अस्तित्व को बनाये रखने हेतु आवश्यक है. विवाह का स्वरुप कैसा हो ? आदर्श विवाह किसे कहेंगे ? आदर्श विवाह हेतु नवीन सामाजिक परिस्थितियों एवं आधुनिक अवधारणाओं में क्या वैवाहिक सम्बन्ध तय करने की पारंपरिक पद्धतियों में परिवर्तन की आवाश्यकता है ? विवाह के साथ व विवाह संबंधी समस्याओं से जुडे अनेक मुद्दों पर सारगर्भित लेख, इस अंक के स्थाई स्तम्भ "मंथन" में प्रकाशित कर रहे हैं. साथ ही भारतीय जैन संघटना, विवाह एवं वैवाहिकता विषय पर विभिन्न कार्यक्रमों का आवश्यकतानुरूप निर्माण एवं क्रियान्वयन गत 31 वर्षों से लेकर आज तक करता आ रहा है जो हमारे संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था की दूरदृष्टि एवं वैचारिकी से सिंचित हैं.

मित्रों ! भारतीय जैन संघटना एक प्रगतिशील सामाजिक संगठन है जो समय के साथ चलता ही नहीं अपितु कार्यप्रणालियों एवं कार्यक्रमों में त्वरित परिवर्तन लाकर समाज हेतु उसकी उपयोगिता सिद्ध करता रहा है. पिछले कुछ दशको में परिवर्तनों के जो तूफ़ान आ रहे हैं उसके थपेड़ों को हम सभी झेल रहे हैं. समय का चक्र सदैव गतिमान रहता है जो प्रकृति का नियम है. एक क्षण बीता तो दूसरा क्षण उसका स्थान लेता है. यह क्रम शाश्वत है. किन्तु जाने वाला प्रत्येक क्षण हमें सन्देश देकर जाता है कि अगले क्षण का उपयोग करें, क्योंकि बीता क्षण पुनः लौटकर नहीं आता. परिवर्तनों के तूफ़ान भी हमें संकेत दे रहे हैं कि स्वयं को बदलो, सोच को बदलो, अन्यथा बहुत ही पीछे रह जाओगे और दुनिया आगे निकल जायेगी. इतिहास गवाह है कि जड़ताओं के कारण परिवर्तनों की नियति को नहीं समझ सकने वाली सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ काल गर्त में समा गयी हैं.

मुझे अत्यंत ही प्रसन्नता के साथ सूचित करना है कि 5 व 6 नवंबर, 2016 को चेन्नई में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन के सफल आयोजन के पश्चात् निर्धारित किए गए लक्ष्यों पर बीजेएस त्वरित रूप से कार्यरत हो चुका है. भारतीय जैन संघटना के युवती सक्षमीकरण कार्यक्रम को महाराष्ट्र सरकार ने स्वीकार किया तथा अहमदनगर जिले के 903 सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 8 से 10 की 1,03000 छात्राओं के सक्षमीकरण का अभियान प्रारम्भ हो चुका है. इस हेतु सरकारी विद्यालयों के 74 शिक्षकों को मुख्य प्रशिक्षक बनाने का प्रशिक्षण अहमदनगर एवं संगमनेर के प्रशिक्षण शिविरों में दिया गया है. राष्ट्र निर्माण में जैन समाज व बीजेएस व्दारा की जा रही पहल निश्चित ही महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली है.

प्रफुल्ल पारख
राष्ट्रीय अध्यक्ष, भारतीय जैन संघटना

संपादक
प्रफुल्ल पारख, पुणे
कार्यकारी संपादक
निरंजन कुमार जुवाँ जैन, अहमदाबाद
सदस्य
कैलाशमल दुगड़, चैन्नई सुरेश कोठारी, अहमदाबाद सुदर्शन जैन, बड़नेरा, वीरेंद्र जैन, इंदौर
महेश कोठारी, गोंदिया, संजय सिंघी, रायपुर, राजेंद्र लुंकड़, इरोड़

मंथन

आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में विवाह

हम कुछ दिनों हेतु पर्यटन पर जाएँ तो प्रयास रहता है कि 3 से 5 सितारा होटल में रुकें. यह विचारणीय है कि हमारे घर को कितने सितारे हैं, जिसमें हम जीवन पर्यन्त रहते हैं?

तृतीय विश्व के छोटे से देश भूटान ने अग्रणी दृष्टिकोण के साथ दुनिया का नेतृत्व एक नवीन सामाजिक सन्देश के साथ किया है. भूटान ने वर्ष 1971 से 'सकल घरेलू उत्पाद' (GDP) की अवधारणा को प्रगति के पैमाने के रूप में अस्वीकृत कर, इसके स्थान पर 'सकल राष्ट्रीय खुशहाली' (GNH), नागरिकों की खुशहाली मापने की अवधारणा को प्रस्थापित किया जिसमें भौतिक विकास को महत्व नहीं दिया गया. भूटान का अनुकरण करते हुए, मध्यप्रदेश देश का प्रथम राज्य है जिसने "खुशहाली विभाग" की रचना की है.

देशवासियों की खुशहाली ही राष्ट्र के स्वस्थ होने का परिचायक है

राष्ट्र की रचना हेतु समाज मूल तत्व है. समाज की इकाई परिवार है. परिवार का सृजन उन व्यक्तियों से होता है जिनका जन्म से एक दूसरे के साथ सम्बन्ध हो या विवाह उपरांत संबंधों का शुभारम्भ हुआ हो. पूर्व एवं पाश्चात्य संस्कृतियों एवं समाजों में परिवार के स्वरुप, कार्यक्षेत्रों एवं उद्देश्यों में बड़ा भारी अंतर है. एक समय तक भारत में परिवार नाम की संस्था समाज रुपी सागर को समृद्धता प्रदान करती रही. भारतीय परिवार उसके सदस्यों को पोषण के साथ - साथ सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करते थे. भारत समस्त विश्व में संयुक्त परिवार प्रथा, पक्के एवं सच्चे रिश्तों तथा सुदृढ़ पारिवारिक संस्कृतियों हेतु विख्यात रहा है. कुछ अवांछित कारणों से गत कुछ दशकों में संयुक्त परिवार प्रथा का देश में लगभग विघटन हो चुका है व इसके स्थान पर छोटे परिवार अस्तित्व में आये हैं. परिवर्तनों के कारण बदल रहे सामाजिक परिदृश्य में अब वैयक्तिकता की प्रबलता एवं आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से उत्तरदायित्वों व बंधन मुक्त जीवन शैली का उदय ही नित नवीन सामाजिक समस्याओं के प्रादुर्भाव का कारण है.

विवाह से परिवार अस्तित्व में आता है जिससे समाज की रचना होती है. अतः विवाह का महत्त्व सर्वोपरि है. पाश्चात्य संस्कृति में विवाह महज एक समझौता या अनुबंध है, जबकि पूर्व के देशों की संस्कृति में विवाह एक संस्कार है व स्वयं में एक संस्था है जो परिवार के माध्यम से समाज रुपी वटवृक्ष का सिंचन करती है. यहाँ महत्वपूर्ण है कि हम विवाह के आधुनिक भारतीय दृष्टिकोणों को मनोवैज्ञानिक सन्दर्भों में समझे. विवाह एक ऐसी व्यवस्था है जो अजनबियों को एक परिवार का हिस्सा बनाती है. बदलते सामाजिक समीकरणों में वैवाहिक रिश्ते तय करने की परिकल्पना का आधार अब अधिकांशतः भौतिकतावादी या आदर्शवादी होता जा रहा है, फलस्वरूप विवाह के प्रत्याशियों को यह ज्ञात ही नहीं हो पाता कि विवाह से उनकी मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक जरूरतें संतुष्ट होंगी या नहीं ? यही कारण है कि महिला पात्र विवाह पश्चात के सामंजस्यों के प्रति आश्वस्त नहीं हो पाती जो परिवारों के टूटने का बड़ा कारण है.

गत कुछ दशकों में परिवार के सदस्यों की व्यक्तिगत महत्वकांक्षाओं को गलत सन्दर्भों में देखने का प्रचलन भी भारतीय परिवारों में बढ़ता जा रहा है. व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएं अपराध नहीं अपितु बदलते समय की आवश्यकता है. किन्तु परिवार में खुशियाँ उस समय बिखरने लगती है जब महत्वकांक्षाओं एवं योग्यताओं के आधार पर विशेषकर महिला पात्रों द्वारा उद्यम या करियर की बात की जाती है. आज के समय की यह मांग है कि परिवार के महिला पात्रों विशेषकर शिक्षित पुत्रवधुओं की महत्वाकांक्षाओं के प्रति हमारी पारंपरिक वैचारिकी में परिवर्तन लायें. यह समय हमें स्वयं को बदलने का है. हमारी रूढीगत एवं पारंपरिक वैचारिकी को बदलकर एक नए भारत का निर्माण करना हम सभी का दायित्व है, जो सुखी परिवार की परिकल्पनाओं से ही संभव है.

मानव सभ्यता एवं संस्कृतियों को जीवंत रखने हेतु परिवार एवं समाज नितांत आवश्यक है, किन्तु अपना देश ही नहीं अपितु समस्त विश्व एक नवीन किन्तु अकल्पनीय सामाजिक व्यवस्था की ओर प्रयाण कर रहा है. सर्वेक्षणों से ज्ञात होता है की समस्त विश्व की वर्तमान युवा पीढ़ी की विवाह एवं परिवार व्यवस्था में अविश्वास एवं अरुचि बढ़ रही है व जीवन पर्यंत वैयक्तिक जीवन निर्वाह के हिमायती बनती जा रही है. उद्-भवित हो रही नवीन सामाजिक समस्या अणुबंब के विस्फोटो से अधिक खतरनाक सिद्ध होगी. यह समस्या विकराल रूप धारण करे इससे पूर्व ही समाज व देश को इसके भीषण दुष्परिणामों से अवगत एवं जागृत करना होगा.

"विवाह खुशी के लिए किया जाये इससे भी अधिक न्यायसंगत है विवाह से खुशहाली आये"

आदर्श विवाह एवं सुखी परिवार की संकल्पनाओं को साकार करते भारतीय जैन संघटना के विविध कार्यक्रम

संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था द्वारा भारतीय जैन संघटना की स्थापना वर्ष 1985 में प्रारम्भिक रूप से जैन समाज में व्याप्त विवाह की समस्याओं के समाधान के उद्देश्य से की गयी थी. वैवाहिक उत्सवों में किये जाने वाले अति-अनावश्यक खर्च एवं सामूहिक विवाहों की आवश्यकता पर जनजागृति अभियान के संचालन व सामूहिक विवाहों के आयोजनों तथा समय - समय पर किये गए सामाजिक अध्ययनों/सर्वेक्षणों से समाज में उत्पन्न हो रही विभिन्न समस्याएँ सामने आयीं, जिनमें स्त्रियों की घटती जन्मदर, बढ़ती तलाक की दर एवं वैवाहिक रिश्ते तय करने में आम तौर पर बढ़ती जा रही कठिनाईयां आदि प्रमुख हैं.

इन समस्याओं के समाधान व सुखी परिवार की संकल्पना को यथार्थ स्वरुप देने हेतु अनुसंधान आधारित विभिन्न कार्यक्रमों का निर्माण भारतीय जैन संघटना ने समाज व राष्ट्र के प्रति उसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन में किया, जिनमें कुछ निम्न हैं :

वैवाहिक रिश्ते तय करने की प्रक्रिया में सुधार हेतु श्रृंखलाबद्ध व्याख्यान (Lectures on Reforms in Marriage Fixing Process)

दम्पत्तियों के मध्य बढ़ रही असामंजस्यता एवं तलाक की बढ़ती दर का मुख्य कारण परिवर्तनशील युग में पारंपरिक पद्धति से वैवाहिक रिश्ते अब भी तय करना है जिसमें युवक - युवतियों की मानसिक एवं वैचारिक अनुकूलताओं को स्थान ही नहीं दिया जाता. वर्तमान आधुनिक युग में वैवाहिक रिश्ते तय करने से पूर्व शिक्षित युवक - युवतियों की अनुकूलताओं का मिलान ही सफल विवाह एवं सुखी परिवार की कुंजी है. बी.जे.एस. का दृढ़ विश्वास है कि वह दोनों पात्र ही हो सकते हैं जो स्वयं की परस्पर अनुकूलताओं का मिलान करें जिसमें परिवार द्वारा निर्धारित सीमाओं एवं मर्यादाओं को ध्यान में रखा जाए. भारतीय जैन संघटना के संस्थापक आदरणीय श्री शांतीलालजी मुथ्था ने लगभग 2 वर्ष पूर्व वैवाहिक रिश्ते तय करने की नवीन अवधारणा समाज के समक्ष प्रस्तुत की थी व बी.जे.एस. इस विषय में व्याख्यानमालों के माध्यम से समाजजन को जागृत करने हेतु प्रयासरत है.

मेट्रीमोनियल गेट-टू-गेदर (Matrimonial Get-Together & Meets)

बी.जे.एस. द्वारा उच्च शिक्षित प्रत्याशियों को पूरे देश से आमंत्रित किया जाता है जिसमें उन्हें परस्पर चर्चा एवं वार्तालाप व एक - दूसरे को समझने हेतु पर्याप्त समय दिया जाता है. गतिविधियों पर आधारित इस कार्यक्रम में पुरुष एवं महिला पात्रों को समूहों में बांटकर विभिन्न गतिविधियां करवाई जाती हैं जिससे विपरीत पात्र की पसंदगी, शिष्टाचार, तरीकों, वैचारिकी, अपेक्षाओं, आदर्शों, विलक्षणताओं, स्वप्नों, जीवन के दृष्टिकोणों एवं भविष्य की योजनाओं आदि को समझने का अवसर मिलता है व योग्य जीवन साथी की सूची बनाने में व वैवाहिक रिश्ते तय करने की प्रक्रियाओं में यह अत्यंत ही कारगर सिद्ध हो रहा है.

परिचय सम्मेलन (Parichay Sammelan)

वैवाहिक रिश्ते तय करने हेतु योग्य पात्रों के चयनार्थ समाजजन हेतु परिचय सम्मेलनों का आयोजन बी.जे.एस. द्वारा गत ३० वर्षों से समस्त देश में किया जा रहा है, जिसमें प्रत्याशी एवं अभिभावक उपस्थित रहते हैं व एक ही जगह उनके बेटे-बेटियों हेतु बहु-विकल्पों में से योग्य पात्र चुनने का सुअवसर प्राप्त होता है. बी.जे.एस. ने बदलते समय की मांग के अनुरूप परिचय सम्मेलनों के प्रारूप एवं आयोजन के तरीकों में व्यापक परिवर्तन कर उन्हें अधिक परिणामलक्षी बनाया है. अब वर्गीकृत आधार पर उच्च शिक्षित, शिक्षित, ग्रामीण, पुनर्विवाह, एन.आर.आई. आदि के अलग - अलग आयोजन किये जाते हैं.

युगल सक्षमीकरण (Empowerment of Couples)

दो दिवसीय इस कार्यशाला में परस्पर समझ, संवाद, सन्देश व्यवहार एवं जीवन साथी तथा परिवारजन के मध्य स्वीकृति एवं सामंजस्य आदि विषयों पर चर्चा की जाती है. इस कार्यशाला में विवाह का अर्थ एवं उद्देश्य जैसे गहन विषय, विवाह पश्चात के काल एवं उत्तरदायित्व व सुखी जीवन से सुखी परिवार आदि विषय पर युगलों को सारगर्भित चर्चाओं से वैवाहिक जीवन उन्नत बनाने हेतु प्रशिक्षित किया जाता है.

लगातार 25 वर्षों से नि:शुल्क प्लास्टिक सर्जरी शिविर का आयोजन

भारतीय जैन संघटना का मानव सेवा अभियान

विश्व में हर 700 बच्चे में से 1 बच्चा हर वर्ष कटे – फटे ओंठ एवं तालू की समस्या के साथ जन्म लेता है. भारत में यह समस्या और भी ज्यादा गंभीर है. ऐसे विकृत चेहरे के बच्चे उपेक्षित जिन्दगी व्यतीत करते है. जन्म लेने के पश्चात् वे अपनी मां का दूध तक नहीं पी पाते. इन्हें खाने-पीने की तकलीफ के साथ श्वांस लेने, सूंघने व बोलने में भी कठिनाई महसूस होती है. ऐसे बच्चों को मानसिक तनाव, उपेक्षित व्यवहार व अंधविश्वास का सामना करना पड़ता है. उपेक्षित व निचले तबके के बच्चों की इस गंभीर समस्या के निदान के लिए भारतीय जैन संघटना लगातार 25 वर्षों से नि:शुल्क प्लास्टिक सर्जरी शिविर का आयोजन कर रहा है. मानव सेवा के इस अभियान में 1991 से अब तक, विश्व विख्यात प्लास्टिक सर्जन पद्मश्री डॉ. शरद कुमार दीक्षित के सहयोग से कटे-फटे ओंठ, चेहरे पर दाग, पलकों, नाक, कान - की बाह्य विकृति के 2.5 लाख से अधिक आपरेशन सफलता पूर्वक किये जा चुके है. जिससे गरीब तबके के मरीज व बच्चों के चेहरे पर खुशहाली आई है तथा अब सामान्य जीवनयापन कर रहे हैं.

इस वर्ष नि:शुल्क प्लास्टिक सर्जरी शिविरों के रजत जयंती वर्ष का आयोजन दिनांक 5 जनवरी,2017 को पुणे के संचेती हास्पिटल में आयोजित किया गया है. इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य के स्वास्थ्य मंत्री माननीय श्री दीपक सावंत उद्घाटक के रूप में उपस्थित रहेगें. साथ ही भारतीय जैन संघटना के संस्थापक श्री शांतीलालजी मुथ्था, पदमविभूषण डा. के.एच.संचेती, संचेती हास्पिटल के डा.पराग संचेती, अमेरिका के प्लास्टिक सर्जन डा. विन्सिंटाइन लैरी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहेगें.

अविरत मानव सेवा के रजत जयंती वर्ष में भारतीय जैन संघटना व्दारा नि:शुल्क प्लास्टिक सर्जरी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं कर्नाटक राज्यों में कुल 13 शिविरों का आयोजन दिनांक 2 दिसम्बर से 15 जनवरी तक सम्पन्न होगा.

मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबिरात १४७ शस्त्रक्रिया

नाशिकरोड येथील भारतीय जैन संघटनेच्या वतीने जिल्हा शासकीय रुग्णालयात घेतलेल्या शिबिराचा समारोप

प्रतिनिधी । नाशिकरोड

नाशिकरोड येथील भारतीय जैन संघटना, अखिल भारतीय परमेष्टी फाउंडेशन आणि जिल्हा शासकीय रुग्णालय यांच्या संयुक्त विद्यमाने २ ते ४ डिसेंबरदरम्यान २४ वे मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबिर आयोजित करण्यात आले होते. या मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबिरात ३२८ रुग्णांनी तपासणी केली होती. त्यापैकी १४७ रुग्णांवर डॉ. राज लाला यांनी शस्त्रक्रिया केली.

जिल्हा शासकीय रुग्णालय येथे भारतीय जैन संघटनेने मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबिर आयोजित करण्यात

भारतीय जैन संघटनेतर्फे आयोजित मोफत प्लास्टिक सर्जरी शिबिराच्या समारोपप्रसंगी डॉ. राज लाला यांच्यासमवेत संघटनेचे पदाधिकारी.

करण्यात आल्याचे संघटनेचे अध्य ललित सुराणा यांनी सांगितले.

शिबिरामध्ये नाशिक, पु जळगाव, सटाणा, येवला, मालेग इगतपुरी, चोटी, कळवण, पेठ, सि तालुक्यातील रुग्णांनी लाभ घे शिबिरासाठी डॉ. राज लाल, गीता मनचंदानी, डॉ. अमित बस डॉ. डेरले, डॉ. सुरेश जग डॉ. गजानन होले, ललित सु संजय चोपडा, मनोज मंड संदीप ललवाणी, प्रशांत छ मनीष शहा, रूपेश चोपडा, चोरडिया, मनोज संचेती, रोहित योगेश भंडारी आदी पदाधिका

ओठ, नाक, चेहऱ्यावरील डाग, व्रण एकूण ३२८ रुग्णांनी लाभ घेतला होता.

आगामी 3 माह में होगा 1 लाख युवतियों का सक्षमीकरण

5 व 6 नवम्बर, 16 को चेन्नई में आयोजित बीजेएस राष्ट्रीय अधिवेशन में की गयी घोषणाओं के अनुरूप लक्ष्य प्राप्ति हेतु त्वरित क्रियान्वयन प्रारम्भ हुआ है. राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री शान्तीलालजी मुथ्था ने बीजेएस के आगामी 3 वर्षों के लक्ष्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए घोषणा की थी कि 2 लाख छात्राओं का सक्षमीकरण शालेय शिक्षा विभाग के सहयोग से किया जावेगा. इस अनुसंधान में भारतीय जैन संघटना के "युवती सक्षमीकरण" कार्यक्रम को महाराष्ट्र सरकार ने स्वीकृत कर पथ प्रदर्शक कार्यक्रम स्वरूप में अहमदनगर जिला के 903 विद्यालयों की 8वीं से 10वीं की 1,03,000 छात्राओं को सक्षम करने का निर्णय लिया. इस हेतु टीचर्स ट्रेनिंग कार्यक्रम दिनांक 21-22 नवम्बर,2016 को अहमदनगर में तथा 23-24 नवम्बर,2016 को संगमनेर (महाराष्ट्र) में आयोजित किये गये जिनमें 70 सरकारी शिक्षकों को मास्टर ट्रेनर्स के रूप में प्रशिक्षित किया गया जो आगामी एक माह में 1000 सरकारी शिक्षको को ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित करेगें. प्रत्येक ट्रेनर फरवरी माह में 50-50 बेटियों की 2 कार्यशालाओं के माध्यम से 100 बेटियों को सक्षम करेगें, इस तरह 1000 ट्रेनर्स व्दारा फरवरी माह तक 1 लाख से अधिक बेटियों को सक्षम किया जायेगा. यह हर्ष का विषय है कि भारतीय जैन संघटना निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप योजनाबध्द तरीके से कार्यरत है.

70 सरकारी शिक्षकों को "युवतियों का सक्षमीकरण" कार्यक्रम की मास्टर ट्रेनर्स ट्रेनिंग

उच्चशिक्षित जैन युवक-युवती परिचय सम्मेलन Saturday, 24 December 2016

कार्यक्रम स्थल :'ओ' होटल , कोरेगाव पार्क , पुणे

आवेदन हेतु अंतिम तिथि: 20 दिसम्बर 2016 संपर्क: शशिकांत मुनोत -94204 77052

ऑनलाईन आवेदन: www.bjsmm.bjsapps.com

प्रतिभाएँ - जो हमारी प्रेरणा के स्रोत हैं

इनसे मिलिये

भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, इन्दौर

भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, बी.जे.एस. के प्रारम्भिक काल से ही संस्थापक शांतीलालजी मुथ्था के साथ जुड़कर विविध सामाजिक कार्यों को अंजाम देते आ रहे हैं.

35 वर्ष की उम्र में आप जैन सोश्यल ग्रुप, इन्दौर के अध्यक्ष निर्वाचित हुए. आपके अध्यक्षकाल में 56 जोड़ों का सामूहिक विवाह, 5,600 युवक-युवतियों हेतु परिचय सम्मेलन, विधवा-विधुर तथा परित्यक्ता परिचय सम्मेलन एवं उनके सामूहिक विवाह आदि सम्पन्न हुए हैं. आपने 'ज़र्नलिज्म एण्ड मॉस कम्युनिकेशन' में ग्रेजुएशन किया तथा 'इन स्पीच कम्युनिकेशन' में डिप्लोमा प्राप्त किया. श्री जैन ने बोलने-सुनने की शिक्षा देने के लिए 100 से अधिक विद्यालयों के लगभग 5000 विद्यार्थियों के लिए 'किशोर वाणी' खेल का दो बार आयोजन किया. रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर इन अल्टरनेटिव मेडिसिन में श्री वीरेन्द्र कुमार जैन 'काऊ यूरिन थैरिपी' के अन्वेषक हैं.

देश-विदेश के असाध्य रोगों के 12 लाख से अधिक मरीजों का गोमूत्र चिकित्सा से सफलतापूर्वक इलाज में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है. अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'गोमूत्र चिकित्सा' पर प्रज़ेंटेशन देकर इस अद्वितीय उपचार पद्धति की प्रशंसा पा चुके श्री जैन को भारत सरकार के पेटेन्ट विभाग ने गोमूत्र से बनी दवाईयों के लिए प्रथम पेटेंट भी प्रदान किया है. आप मुम्बई तथा नाशिक में कैन्सर मरीजों के इलाज हेतु नि:शुल्क सेंटर चला रहे हैं.

आपने देश की 12000 गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाने का अभियान प्रारम्भ किया है. विष रहित फसलों के उत्पादन हेतु जैविक खेती करने के तरीकों पर लाखों किसानों को विगत 15 वर्षों मे प्रशिक्षण दिया है. आप जैन श्वेताम्बर सोश्यल ग्रुप्स फेडरेशन के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं. जैन सोश्यल ग्रुप्स फेडरेशन-उत्तर क्षेत्र के चेयरमैन रह चुके 60 वर्षीय श्री वीरेन्द्र कुमार जैन स्वर्णिम नेचर साइन्स लिमिटेड के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर हैं, जैन्स काऊ युरिन थैरिपी हेल्थ क्लीनिक के अध्यक्ष, स्वर्णिम रियल इस्टेट एक्सचेंज (स्वर्णिम रैक्स) के चेयरमैन तथा इंटरनेशनल फाईन आर्ट्स एकेडमी के डायरेक्टर हैं. सामाजिक कार्य हो या व्यवसाय प्रत्येक में टेक्नोलॉज़ी का भरपूर उपयोग करना आपकी विशेषता है. स्वयं के कार्यालय मे कागज़रहित तथा ऑनलाईन कार्य करना आपकी आदत और रूचि दोनो ही है.

vkjain@rplnetwork.com

हमें इन पर गर्व है :

एडव्होकेट श्री गौतम संचेती, औरंगाबाद

आपका जन्म 30 जनवरी 1951 को वैजापुर (जिला औरंगाबाद) मे पिता स्व. श्री कचरादासजी एवं माता स्व. श्रीमती सूरजबाई के परिवार मे हुआ. LLB तक शिक्षा प्राप्त कर आपने व्यावसायिक जीवन का शुभारम्भ वर्ष 1981 मे किया.

एक व्यवसायी के रूप मे आपने आधुनिक एवं स्पर्धात्मक बाज़ार मे विविध कंपनिया जैसे संचेती गैस बौटलिंग प्रा.लि, बालाजी जिनिंग एंड प्रेसिंग, सच्चिया लैंड एण्ड अग्रो डेव्हलपर्स प्रा.लि. (लन्दन) की स्थापना कर व्यावसायिक जीवन मे ऊँचाइयों को स्पर्श किया है.

श्री शांतीलालजी मुथ्था से प्रभावित होकर आप भारतीय जैन संघटना से वर्ष 1987 मे जुड़े. तत्पश्चात औरंगाबाद जिला अध्यक्ष, मराठवाड़ा विभागीय अध्यक्ष तथा महाराष्ट्र राज्य अध्यक्ष व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य आदि पद सुशोभित किये. 1993 के लातूर भूकंप, 2001 के गुजरात भूकंप मे आपने रचनात्मक सेवाएँ प्रदान की. हाल ही मे औरंगाबाद जिला के आत्महत्याग्रस्त किसानो के बच्चों को शैक्षणिक पुनर्वसन हेतु पुणे भेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

वर्ष 2004 से 2008 तक आप Federation of Jain Education Institute महाराष्ट्र के राज्य अध्यक्ष रहे व शिक्षा क्षेत्र के विकास हेतु प्रशंसनीय कार्य किये. आपके नेतृत्व मे 2004 में ओसवाल जैन ट्रस्ट एवं पी.डी.एम. इंग्लिश मीडियम स्कूल की स्थापना हुई जिसके आप अध्यक्ष हैं. दिल्ली पब्लिक स्कूल औरंगाबाद के आप प्रोजेक्ट चेयरमेन हैं.

सामाजिक क्षेत्र मे भी श्री संचेती ने अपनी विशेष पहचान बनाई. वैजापुर जैन श्रावक संघ के ट्रस्टी, राजस्थानी विद्यार्थी गृह के 2005 से कोषाध्यक्ष, सकल जैन समाज के सलाहकार, महावीर इंटरनेशनल के सदस्य, जीतो अपैक्स के डायरेक्टर, मराठवाड़ा जीतो चेप्टर के अध्यक्ष, लायंस क्लब औरंगाबाद के सचिव व टेक्स प्रेक्टिशनर्स असोसिएशन के अध्यक्ष रहे हैं.

आप कुशल सामाजिक नेतृत्वकार होने के साथ ही प्रभावी व्यक्तित्व के धनी हैं. आप मराठवाड़ा क्षेत्र के उन गिने चुने व्यक्तियो में से एक हैं जिनका नाम आदर व सम्मान के साथ लिया जाता है.

gautam.sancheti@gmail.com

युवा प्रतिभा :

महिलाओं के 'अस्तित्व' की मसीहा : रेहाना

आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करती 21वीं शताब्दी में एसे क्षेत्र इस देश में आज भी हैं जहाँ महिलाओं के साथ अत्याचार होते हैं, उनकी आवाज़ को दबाया जाता है, घर से बाहर निकलने के लिए पर्दा, घुंघट या बुरखा आज भी जरूरी है, जो हमारे देश के अर्धविकसित होने का प्रमाण है. आज भी खाप पंचायतों द्वारा लिंग एवं जातिभेद के आधार पर महिलाओं के साथ अन्याय किया जाना, समाज का घृणित चेहरा उजागर करता है.

रेहाना आशा की वह किरण है जो सड़ीगली सामजिक अव्यवस्थाओं का प्रतिकार करने व महिलाओं को इस हेतु सक्षम बनाने में उत्तरप्रदेश के मुज़फ्फरनगर के पिछड़े इलाकों में कार्यरत है. यह वह स्थान है जहाँ जाति आधारित खाप पंचायतों का राज है जिन्हें राजनीतिक समर्थन प्राप्त है. रेहाना पर्दा प्रथा व पारिवारिक हिंसा के विरुद्ध प्रभावी संदेशों, वार्तालाप व नुक्कड़ नाटकों से महिलाओं को सक्षम कर रही है. रेहाना ने इस हेतु 'अस्तित्व' नामक संस्था की स्थापना की है जो रूढ़ीवादी लोगो के खिलाफ महिलाओं के समर्थन में संघर्ष करती है. पारिवारिक जीवन उन्नत हो इस हेतु शराब की दुकाने बंद करवाने हेतु वह प्रयासरत है. हम रेहाना एवं उनकी संस्था 'अस्तित्व' को नमन करते हैं जो महिलाओं के समान सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्षरत है.

संवैधानिक अधिकारों के प्रति अल्पसंख्यक जैन समुदाय में सचेतनता आवश्यक

भारतीय संविधान ने देश के नागरिकों को सार्वभौमिक प्रजातंत्रीय गणतंत्र प्रदान किया जिसका अर्थ प्रजा का, प्रजा के लिए एवं प्रजा के द्वारा है, जिसमें देश के शासन में प्रजा की भागीदारी की भावना निहित है. संविधान निर्माताओं ने मात्र राजनीतिक प्रजातंत्र की व्यवस्था नहीं दी अपितु विभिन्न जातियों एवं धर्मावलम्बियों की भौगोलिक स्थितियों के अनुरूप वास्तविक सामाजिक एवं आर्थिक समानुभूति के प्रावधानों के साथ वाणी, अभिव्यक्ति एवं स्वतन्त्रता के अधिकारों से समृद्ध कर, इसे सामजिक गणतंत्र के रूप में भी परिभाषित किया है. भारत विविधताओं का देश है एवं स्वतन्त्रता के समय देश की विभिन्न जातियों, समुदायों एवं धर्मों की आवश्यकतानुरूप सामजिक उत्थान के मद्देनज़र आरक्षण एवं अल्पसंख्यकता जैसे प्रावधानों का मात्र संविधान में उल्लेख ही नहीं किया गया अपितु अधिकारों का स्वरुप भी प्रदान किया.

भारत सरकार ने जैन समुदाय को धार्मिक अल्पसंख्यकता का दर्ज़ा 27 जनवरी, 2014 को प्रदान किया. इससे पूर्व देश के 14 राज्यों ने जैन समुदाय को उनके स्तर पर अल्पसंख्यक दर्ज़ा प्रदान किया हुआ था. अनेक भ्रांतियां व मत-मतान्तरों के कारण अल्पसंख्यक विषय जैन समुदाय में राष्ट्र स्तरीय विवाद का कारण रहा, फलस्वरूप समाज में इस विषय के प्रति अज्ञानता व उदासीनता आज भी विद्यमान है. भारतीय जैन संघटना ने इस स्थिति को मात्र समझा ही नहीं अपितु समस्त जैन समुदाय को विषय, अधिकारों एवं लाभों से परिचित कराने व जैन समुदाय की संस्कृति एवं भावी पीढ़ियों की सुरक्षा के उद्देश्य से रचनात्मक फलश्रुति हेतु 'अल्पसंख्यक लाभ जन-जागृति अभियान' का शुभारम्भ वर्ष 2014 से ही किया.

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 एवं 30 में अल्पसंख्यक समुदायों को विविध संवैधानिक अधिकार प्रदान किये गए हैं. अनुच्छेद 29 में यह उल्लेखित है कि अल्पसंख्यक समुदायों की लिपि, भाषा एवं संस्कृति को संरक्षित किया जाएगा. इस विधान का अर्थ क्या है ? यह हमें समझना होगा. इन संवैधानिक अधिकारों का जैन समुदाय के लिए अर्थ एवं महत्व क्या है? इन संवैधानिक अधिकारों का उपयोग जैन समुदाय द्वारा किस तरह किया जाय? क्या जैन समुदाय सचमुच ही इन अधिकारों का लाभ लेने की स्थिति में है? यह यक्ष प्रश्न हमारे समक्ष है. किन्तु यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जैन समुदाय में अल्पसंख्यक विषय एवं अधिकारों की प्राप्ति के लिए आवश्यक मानसिक सुसज्जता का अभाव स्पष्टरूप से दिखता है.

सम्पूर्ण विश्व मे लगभग 6500 भाषाएं अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं क्षेत्र स्तरीय आदि प्रचलन में है. एक अध्ययन के अनुसार लगभग प्रत्येक दशक के अन्तराल में विश्व में कुछ भाषाएँ लुप्त हो जाती हैं जो इन भाषाओं से जुड़ी मानव संस्कृति के पतन का द्योतक है. हमारे संविधान निर्माताओं की दूरदृष्टी ही थी कि देश की सांस्कृतिक धरोहरों को समृद्धता प्रदान कर रही उन विभिन्न जातियों, धर्मों एवं संस्कृतियों के भविष्य में क्षीण होने की संभावना थी, विशेष संरक्षण के प्रावधान संविधान में किये.

एक तरफ जैन समुदाय की दशक दर दशक घटती जनसँख्या व दूसरी तरफ हमारी अपनी ही मूल संस्कृति से बढ़ती दूरीयाँ, जैन समुदाय के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा रही हैं. इस विषय पर जैन समाज में मत-भेद हो सकते हैं किन्तु यह भी नग्न सत्य है कि जैन समुदाय स्वयं की भाषा एवं लिपि से कोसों दूर होता जा रहा है, जो अंततः हमारी संस्कृति के पतन का कारण बन सकता है. हमारी मूल लिपि एवं भाषा या भाषाएँ क्या हैं? हमारी संस्कृतिक धरोहरें कौनसी हैं, जो हमारी विश्वस्तरीय प्रतिष्ठा का कारण रही हैं? क्या इन्हें मात्र हमारी विरासत मान लेना उचित एवं पर्याप्त होगा? या फिर इनके संरक्षण की आवश्यकता है? हमारी लिपि, भाषा एवं संस्कृति हमारे दैनिक जीवन हिस्सा कैसे बने? इस विषय पर जैन समुदाय में राष्ट्र स्तरीय चिंतन की आवश्यकता है.

भारतीय संविधान ने हमें अधिकार देकर यह अवसर प्रदान किया है कि हम हमारी लिपि, भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण से सम्बद्ध योजनाओं का निर्माण कर संवैधानिक प्रावधानों के तहत् भारत सरकार से स्वीकृत करवाएं. अल्पसंख्यक विषय को लेकर जैन समुदाय में व्याप्त उदासीनता तथा अचेतनता को समाप्त करने हेतु गंभीरता से प्रयास होने चाहिए. जैन अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थाओं के माध्यम से लिपि एवं भाषा संबंधी योजनाओं का क्रियान्वयन संभव है. जैन समाज के विभिन्न पंथों में संस्कृतिक मुद्दों पर धरातलीय मत मतान्तर हो सकते हैं किन्तु सर्वस्वीकृत अनुकरणीयताओं पर सहमति हेतु जैन समुदाय के बुद्धिजीवियों को आगे आना चाहिए क्योंकि सरकार द्वारा संवैधानिक प्रावधानों के तहत् प्रदान किये जाने वाला संरक्षण पंथ विशेष का नहीं अपितु जैन समुदाय की सर्व-सम्मत संस्कृति का होगा.

गत कुछ दशकों में वैश्विक स्तर पर आ रहे नाट्यात्मक सामाजिक परिवर्तनों से जैन समुदाय भी अछूता नहीं रहा है, फलस्वरूप वह मूल संस्कृति से विमुख होता जा रहा है. उद्भवित हो रही नवीन परिस्थितियां जैन समुदाय के अस्तित्व को चुनौती देती प्रतीत हो रही है. इस विषय पर गंभीरता से चिंतन कर त्वरित कार्ययोजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन से हम हमारी भावी पीढ़ियों के लिए आवश्यक एवं सुरक्षित सामाजिक धरातल सुनिश्चित कर सकेंगे. भारतीय जैन संघटना इस विषय पर गंभीरता व योजनाबद्ध राष्ट्र स्तरीय प्रयासों हेतु कृतसंकल्पित है.

To,

RNI No.-MAHBIL/2016/66409
Postal Registration No.-PCE / 089 / 2016-2018
License to Post without prepayment No.-WPP-255/31.12.2018
Published on 7th of Every Month
Posted at Market Yard PSO, Pune On-10th of Every Month

If undelivered Please Return To

BJS
Bharatiya Jain Sanghatana

Level IV, Muttha Towers, Loop Road, Near Don Bosco Church, Yerawada, Pune 411016
Tel. : 020 4120 0600, 4128 0011, 4128 0012
Website: www.bjsindia.org **Email :** info@bjsindia.org **Facebook :** www.facebook.com / BJSIndiacommunity **Tweeter :** BJS_India

मुद्रक तथा प्रकाशक – प्रफुल्ल पारख द्वारा भारतीय जैन संघटना के लिये प्रभात प्रिंटिंग वर्क्स, 427, गुलटेकड़ी, पुणे – 411037 से मुद्रित तथा मुथ्था टावर, लूप रोड, नियर डॉन वास्को चर्च, येरवडा, पुणे – 411006 से प्रकाशित. सम्पादक – प्रफुल्ल पारख, फ़ोन – (020) 41200600